रामपन

RAMNESS

पार्ट–2

प्रस्तुतकर्ता :–

रामराज्य आहवाहन मिशन

Website : www.ramrajyaahwahan.com
E-mail : ram@ramrajyaahwahan.com

प्रमुख कार्यालय :
ए 1, बी 2, पुष्पा अपार्टमेन्ट–III, 44ए, राजेन्द्र नगर,
सैक्टर 5, साहिबाबाद जिला गाजियाबाद (यू0पी0)
फोन नं0 0120–6516399, 09313055063

! ठहरो !

धरती पर, दोबारा से **रामराज्य** जैसी खुशियां लाने मे हमारा सहयोग करे।

रामराज्य आह्वाहन मिशन

वैबसाईट देखें :

www.ramrajyaahwahan.com

नोट : *आप भी राम हो सकते हैं, आप कहीं न कहीं के राजा हैं, आप किसी न किसी बात के धनी हैं, आप अपने परिवार या अपने व्यापार के राजा ही तो हैं, भगवान ने हर एक को बनाया हैं। अपना राज्य तथा अपना धन पहचानें और अपने राज्य को रामराज्य जैसा बनाकर, इस दुनिया में रामराज्य लाने में हमारा सहयोग करें।*

मिशन को जानने के लिए सम्पर्क करें।

A1&B2, पुष्पा अपार्टमैंट–III, 44A, राजेन्द्र नगर, सैक्टर 5, साहिबाबाद, जिला गाजियाबाद
फोन नं0 : 0120–6516399, 9313055063
E-mail : ram@ramrajyaahwahan.com

मिशन सोचता है कि परिवार एक राज्य ही तो है, व्यापार एक राज्य ही तो है इसका मुखिया एक राजा ही तो है। हर राजा अपने राज्य को ऐसे क्यों नहीं चलाता जैसे राम जी अपना राज्य चलाया करते थे जब आप ऐसा चाहने लगेंगे, तो आप राम जी की तरह राज्य करना सीख भी जाऐंगे ही एवं जब आप राम जी की तरह राज्य करना सीख जाऐंगे तो रामराज्य ही करेंगे और क्या करेंगे। आपको भी आनन्द आ जाएगा आपके परिवार को भी आनन्द आजाएगा और फिर धीरे-धीरे रामराज्य ही होगा आप शुरू करें तथा अपने राज्य में रामराज्य बनाऐं।

बस यही आनन्द है यही सच्चा सुख है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

आप बिल्कुल न सोचें यह छोड़ो सब बेकार है कोई दोस्ती के लायक नहीं है मत सोचो ऐसा । हो सकता है यह सिर्फ आपका भ्रम हो आप तो अपना काम करो बाकी तो भगवान का काम है। आप तो निरन्तर अपना ही काम करते रहें। यही सत्य है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

काश तुमने भगवान की मर्जी पर छोड़ना भी सीख लिया होता। क्या तुम्हारी सोच भगवान की मर्जी से भी ऊपर है। कितने गलत हैं वो लोग जिन्हें अपने बच्चों की खुशी से ज्यादा अपनी जिद की परवाह होती है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

विश्वास में तथा अहंकार में बड़ा छोटा सा फर्क होता है। मै ये काम कर सकता हूं यह तो विश्वास है तथा मैं ही ये काम कर सकता हूँ यह अहंकार है। ध्यान रखना चाहिए विश्वास होना तो अच्छी बात है यह आपको सम्मान दिलायेगा तथा अहंकार अवश्य ही आपको कभी न कभी अपमान कराएगा।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

आओ हम दुनिया के सच्चे ,अच्छे तथा प्यारे से दोस्त बनें। छोटों के, बड़ों के, गरीबों के, अमीरों के, बुरों के, अच्छों के, अपनों के, परायों के ताकि जैसे कि बुरा दोस्त पाकर बुराई आ जाती है हम जैसा अच्छा दोस्त पाकर बुरे अच्छे बनने लग जाऐं तथा अच्छे और अच्छे बनने लग जाऐं तथा बहुत अच्छे भगवान जितने अच्छे

बनने लग जाऐं। आओ संकल्प ले कि हम दुनिया के ऐसे दोस्त बनेगें। यही तो सच्चा दोस्त है।

* * * * * * * * * * * * * * * * *

मैं बताता हूँ कि इस राम राज्य आहवाहन मिशन का उद्‌गम कैसे हुआ बस भगवान की इच्छा की बात है। एक बार मेरे मन में आया कि हमने जन्म क्यों लिया है क्या इसका मतलब बस खाना कमाना, खा पीकर बस मर जाना है क्या बस यही जीवन है। मन में सवाल उठ गया कि जीवन कैसा होना चाहिए कि यह सच में सफल कहलाऐ तो विचार करने पर जाना कि जब आपको जन्म देने वाला आपको पालने वाला आपके साथ रहने वाला या आपके द्वारा पलने वाला अगर आप पर गर्व कर सके तो सच में यही जीवन की सच्ची सफलता है। जब इस पर विचार किया तो सवाल उठा कि ऐसा कैसा हुआ जाए कि तुम पर गर्व किया जा सके तो विचार करने पर मालूम हुआ कि अगर आदमी राम जैसा बन जाए तो वह गर्व के लायक हो जाएगा क्योंकि राम ही ऐसे हुए हैं जिन पर सभी अर्थात भगवान तक गर्व करते हैं। फिर जब विचार किया तो जाना कि बस यही एक सच्ची बात है अब कैसे किया जाए कि न केवल राम ही बल्कि दुनिया का हर जीव ऐसा हो सके तो विचार राम राज्य का उभरा क्योंकि रामराज्य में न केवल राम बल्कि हर चीज हर जीव स्त्री पुरुष, बच्चे, जानवर, पशु, पक्षी, वनस्पति, धरती सभी सुखी थे। तो बस मैंने विचार कर लिया कि बस इस ही कार्य में लगूँगा विचार ने जोर पकड़ लिया शायद इसमें

भगवान की ही इच्छा रही होगी और मैं निरन्तर और जोर तथा और जोर पकड़ने में लगा हुआ हुँ तथा तमाम परशानियों से लड़ता हुआ आगे हिम्मत करते हुए आगे बढ़ रहा हुं। आप सब भी मेरा साथ देने लगोगे तो और भी तेजी से बढ़ पाऊगा वरना अकेले बढ़ते रहने में थोड़ा ज्यादा समय लगेगा। इस प्रकार यह मिशन खड़ा हो गया है।

इस ही प्रकार एक बार मेरे मन में सवाल उठा कि सबने सुना है कि एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है सभी जानते है मगर प्रभु फिर तो ऐसा भी अवश्य ही होगा कि एक मछली सारे तालाब को अच्छा भी कर सकती होगी। विचार जब खूब किया तो जाना हाँ हाँ क्यों नही बस जरा खूब सारी हिम्मत, धैर्य, लगातार प्रयास तथा खुद के बरबाद हो जाने का जोखिम उठा लेने के लिए तैयार होना पड़ेगा। क्योंकि इस मछली को उस तालाब में जिसको कि अच्छा बनाना है उतर जाना होगा। अब यह तो उतर जाने के बाद ही पता चलेगा कि क्या होगा। अब धैर्य से तथा समझदारी से उतरा जाएगा। तो जरुर हो सकता है कि तालाब महक जाए। बस पता नहीं भगवान ने मुझे कहां से हिम्मत दी कि लगा कि हां भई तालाब को गन्दा करने वाली मछली तो सबने सुनी है अब भगवान एक तालाब को अच्छा कर देने वाली भी दिखानी ही चाहिए और ऐसा सोचते हुए मैने यह रामराज्य आहवाहन मिशन नाम की मछली बना दी है। तथा दुनिया में उतार दी है। अब देखो क्या होता है।

* * * * * * * * * * * * * * * * *

मनों की बातें व निर्मल मन :– जब हम मन की बातें करते हैं तो हमें उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि दूसरा वही बात करेगा जो हमें अच्छी लगती है। हो सकता है दूसरा हमारी पसन्द की बात करे, हो सकता है दूसरा हमारी नापसन्द की या हमारी बुराई करे इसके लिए हमें ध्यान रखना चाहिए अगर दूसरा हमें अच्छा लगने वाली बातें करे तो ध्यान रखे कि दूसरे ने हमे अच्छी लगने वाली बाते की हैं अर्थात अब कभी वह हमारी नापसन्द या बुराई की बातें भी करे तो इसका हक बनता है कि उसे क्षमा किया जाए।

साथ में ही यह भी सम्भव है कि जब अच्छी अच्छी बातें हो रही हैं तो अगर हमारे मन में दूसरे के प्रति कुछ छोटे – छोटे द्वेष भाव हैं, शिकायते हैं जो हम कह देने के लिए बेचैन हैं अपने मन में दफन नहीं कर पा रहे हैं तो धीरे धीरे हल्के हल्के हौले हौले निकाल दें ताकि मन हल्का हो जाऐ ये गन्दगियां निकल जाऐं तभी मन निर्मल होता है। दोनो का फर्ज बनता है कि इन बातों को निकल जाने दें क्योंकि इनके निकल जाने से ही मन निर्मल होता है। अपना मन भी निर्मल करें तथा दूसरे का मन भी निर्मल होने दें।

यहां पर प्रश्न है कि जब दूसरा अपने मन की गन्दगी निकालता है तो हमारा मन गन्दा हो जाता है इसके लिए उपाय है ध्यान रखें हम मन की बातें कर रहे हैं अच्छी तथा बुरी दोनों ही बाते होंगी। हमारा कर्तव्य है

कि हम अच्छी बातों के लिए तो दूसरे के आभारी बने तथा बुरी बातों के लिए उसे क्षमा करें तथा बातें बन्द न करें बातें होने दें बस आपने ध्यान रखना है गन्द पर गन्द तथा बुराई नहीं करनी है। क्योंकि बातें होती रहेंगी तथा गन्द निकल जाएगी तो दूसरे का मन निर्मल हो जाएगा तथा आप क्षमाशील रहेंगे तो आपका भी मन निर्मल हो जाएगा तथा जब दोनों का मन गन्दगी रहित शिकायतों रहित बुराईयों रहित हो जाए तो इन दोनों में प्रेम हो जाएगा।

ध्यान रखें जो शिकायतें दूसरों से हैं वो मन में रहने से मन गन्दा रहता है तथा जब वे शिकायतें बता दी जाती हैं तो मन साफ हो जाता है अतः अगर कभी कोई हम से अपनी शिकायत बताता है तो हम खुश हों कि वह हमारे प्रति अपना मन साफ कर रहा है शिकायत न मानें कि वो शिकायत क्यों कर रहा है। पहली बात से निर्मलता मनों की साफ सफाई बढ़ती है तथा दूसरी बात से मनों की गन्दगी बढ़ती है कैसे क्योंकि दूसरे के मन में तो तुमसे शिकायत थी ही साथ में तुमने भी अपने मन में उसके प्रति भी शिकायत गन्दगी पाल ली। क्षमा करना ही बस इसका एक ही सिर्फ एक ही इलाज है। हम समाज को मनों के अच्छा बनाने में सहयोग प्रदान करें न कि मनों की गन्दगी बढ़ाने में।
क्षमाशील होना अत्यन्त आवश्यक है इसके लिए।
मगर यह भी निश्चित है नफरत निकलने के बिना प्रेम सम्भव नहीं है। नफरत तो निकलने ही देनी होगी तथा

फिर उसे वहीं क्षमा करना होगा।

क्षमा कर देंगे तो यहीं प्रेम का बीज फूटेगा तथा क्षमा नही करेंगे तो नफरत का बीज फूटेगा।
हम प्रेम के बीज बनाऐं तथा उगाऐं नफरत के नही।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

मैं जो अपनी नजर में देखता हूँ कि रामराज्य ऐसा है कि दुनिया का सबसे सुन्दर सर्वोच्च गुणवान अर्थात पाँच सितारा का भी पाँच सितारा जब भी मुझे लगता है कि शायद मैं गलत सोच रहा हूँ तो मैं दुखी हो जाता हूँ। पता नहीं फिर भगवान कहीं से कोई बात लाते हैं तथा पुनः मेरा मनोबल बढ़ जाता है और मैं समझ जाता हूँ कि आज मुझमें इस लेवल को बनाने के गुण नहीं है मगर धीरे – धीरे हो जाऐगें। क्योकि मेरे भगवान में वह सब हैं तथा मैं उनका सबसे ज्यादा प्यारा जब हो जाऊंगा वे मुझे अपने वे सब गुण तथा कार्यक्षमता दे देंगे।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

मनों को पालना यह एक बड़ी बात है। शरीरों को सभी पालते हैं यह तो पल ही जाता है मगर जो अच्छे लोग होते हैं वे शरीर के साथ मनों को भी पालते है जब आदमी यह करता है तो जीवन का आनन्द आ जाता है।

मनों का पालना मतलब कि मन धीरे–धीरे खुशी, स्वस्थता की तरफ, सुदृढ़ता की तरफ बढ़ता है। ऐसे

परवरिश की जाती है कि वह अत्यन्त प्यारा, प्रसन्न तथा मजबूत हो जाता है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

माया :–भगवान अपने भक्तों को माया से दूर रखते हैं क्योंकि वह अत्यन्त दुख दायी है। मगर मेरे मन में सवाल उठता है कहते हैं कि भगवान खुद तो माया के खिलाड़ी है तथा माया भगवान को अपने इशारे पर नचाने की बजाय उनके इशारे पर खुद ही नाचती है तथा हमेशा उनकी ही बनी रहती है तथा उनकी बनी रहना चाहती है, अर्थात यह भगवान की व्यवहार कुशलता या भगवान का मैनेजमेंट है।

बस यहीं पर मेरी इच्छा रहती है कि काश भगवान अपने भक्तों को माया से दूर रखने की बजाय अपनी कार्य कुशलताओं में कुशल कर देते तो सभी लोग भगवान के भक्त होने से बचने की बजाय भगवान का भक्त होने में ही ज्यादा रुचि रखते, तो शायद दुनिया का यही सबसे सुन्दर रुप रहता। जब लगातार मैं इस पर विचार मनन करता रहा तो एक दिन भगवान ने मुझ पर कृपा कर ही दी तथा अपनी इन कार्य कुशलताओं का रहस्य खोल ही दिया। उनकी कृपा से मुझे जो अनुभूति हुई साफ लगता है कि यह पूर्णतः सत्य है जो निम्न प्रकार है।

भगवान माया का अत्यन्त ख्याल रखते हैं अत्यधिक सदभाव से, सच्ची नीयत से तथा बिलकुल अपनेपन से ऐसे कि कोई दूसरा इतना नहीं रख सकता

उसको दोस्त की तरह प्यार करते हैं उसके साथ खेलते है उसमे आसक्ति नहीं रखते कभी इसकी चिन्ता नहीं रखते कि माया उन्हे छोड़ गयी तो क्या होगा क्योंकि यह एक आसक्ति ही तो है जो दुख देती है। तथा इस प्रकार माया के इशारे पर भगवान के नाचने की बजाय माया भगवान के इशारों पर नाचती है क्योंकि माया का और कोई तो इतना ज्यादा अपना है ही नहीं और कोई तो इससे ज्यादा उसका ख्याल रखता ही नहीं है इस प्रकार माया अपना सारा प्यार अपना सारा अपनापन, अपनी सारी सेवाऐं अपने भगवान पर लुटाती है तथा हो जाता है उनमें सच्चा प्रेम । ऐसा है भगवान का तथा माया का सम्बन्ध ।

ऐसा ही लगता है मुझको और हां शायद यही सत्य है और शायद ही क्यों बल्कि साफ दिखाई देता है कि यही सत्य है यही है माया को संभालने की कुशलता।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

सभी लोग सही से अपना जीवन चला सकें साथ में भगवान भी उनसे खुश रहें तथा भगवान भी उन पर गर्व करें इसीलिए बनाया है रामराज्य आहवाहन मिशन (R.A.M.) इससे जीवन में सोने में सुहागा हो जाएगा, सोना तो आप हैं ही हम साथ में सुहागा भी देने की कोशिश कर रहे है।

यह तो कौन न चाहेगा कि रामराज्य हो बस वे इस तरफ इसलिए नहीं सोचते कि उन्हें उम्मीद नहीं है कि

ऐसा हो सकता है, अतः वो इधर अपना समय नहीं लगाते और अगर ऐसा हो सकता है तो कौन न चाहेगा।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

मेरी आप सब से बस एक ही प्रार्थना है कि कभी भी किसी के मन को न कुचलें तथा कोशिश करें ऐसा करने की कि दूसरों के मन खुशियों तथा प्रसन्नता एवं उत्साह से भर जाएं कोई आपका मन दुखा दे तो उसे क्षमा कर दें। इस प्रकार ही यह दुनिया प्रेम से भर जाएगी और बस यही होगा रामराज्य इस का मजा तो ले के देखें इससे बढिया कुछ नहीं ।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

जीवन पर्यन्त यथा सम्भव रोज रामायण को पढ़ा करें जो आपको बना देगी विनम्र एवं गुणवान तथा श्री राम जैसा विवेकी।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

मेरे उददेश्य को समझें मेरा उददेश्य है कि जो भी हमारे पास खुशियां है उन खुशियों को लोगों को भी बांटना अगर बांटने से ये कम नहीं होती हैं या बांटने में हमारा कोई खास खर्चा नहीं आता है तथा जो बांटने से बढती हैं तो बांटने में क्या बुराई है। यह निश्चित है ऐंसी बहुत सारी खुशियां होती हैं जो बिना खर्चे के बांटी जा सकती हैं तथा बांटने से और बढ़ती हैं। जैसे ज्ञान, हास्य, खेलना, नाचना, गाना आदि। क्योंकि यह आपको देता है सोने पे सुहागा, आप अच्छे तों है ही अब आप से लोग तथा भगवान भी खुश रहने लगेंगे।

मिशन यही काम कर रहा है मिशन को चाहिए आपका सहयोग। जैसा सभी जानते हैं ज्ञान का होना तथा ज्ञान का सिखाना दो अलग– अलग बाते हैं मिशन चाहता है कि आप अगर एक अच्छे अध्यापक हैं तो मिशन को भी अपनी अच्छी–अच्छी शिक्षाओं को लोगों को सिखाने में मदद करे। अपने कुछ समय को जो आप पर है ढूढेंगे तो मिल जाएगा, मिशन को दें, काश दुनिया यह सीख सके (सीख जाएगी अगर सही प्रकार या उचित सिखाने के तरीके से सिखाया जाएगा) तो भगवान भी दुखी न रहेगे तथा भगवान भी खुश हो जाऐंगे तथा अपनी बनायी हुई दुनिया पर गर्व करेंगे। आप आगे बढें तथा मिशन का सहयोग करें।

आप निम्नलिखित में से जो चाहे मिशन के लिए योगदान करे :–

1. आपके पास जो खुशियां है, उनको दूसरों में भी जितना ज्यादा से ज्यादा सम्भव है बॉटे इन्सान जो देता है वही पाता है अगर आप खुशियां बॉटेगे तो आपको भी खुशियां मिलेगी।

2. जिन बातों से (गानों से, **jokes** से, **sms** से, **email** से, नाचों से घटनाओं से आपका मन खुश होता है, मन झूमने लगता है, मन नाचने लगता है उन सब का आनन्द दूसरों को भी ज्यादा से ज्यादा दें। भगवान आपके बहुत आभारी हो जाऐगे।

3. अपनी इन खुशियों को (गानें jokes, sms, नाच, घटनाऐं emails, अच्छी बातें) मिशन को दान दें ताकि मिशन उनको आगे दान करे।

4. आप मिशन को अपनी योग्यता का दान दीजिए। आप जहां जिस भी स्थिति में है बेटा, विघार्थी, कर्मचारी, पड़ोसी, भाई, नागरिक, इन्सान, भाई, पति, पत्नी, आदि। जो भी हैं ऐसे बनें कि आप पर गर्व किया जा सके। कम से कम आप तो अपने पर गर्व कर सकें। इस पर विचार करोगे तो आप अवश्य ही ऐसे बन पाओगे। यह आप आसानी से जान पाओगे जब सोचोगे कि अगर एक अच्छा गौरवशाली इन्सान होता तो वह क्या करता।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

आप जीवन पर्यन्त रोज रामायण पढें तथा उसको, उसकी सुन्दरता को समझें। आज के समय में हम अकेले ही जीते हैं हमें कोई अच्छी बातें समझाने वाला तथा बताने वाला भी नहीं है। किसी को हम अच्छा समझते हैं तो वह स्वार्थी तथा हमारा फायदा उठाने वाला निकल जाता है ऐसे में हमे चाहिए कोई सच्चा मार्गदर्शन जो हमारे जीवन को लगातार सुलझाता रहे।

रामायण इसका एक मात्र उपाय है जब आप इसको अपनी मार्ग दर्शिका बना लेंगे तथा जीवन में इसे बांध लेगे तो यह एक ऐसी संगत है जो हमारा हमेशा हर परिस्थिति में साथ देगी।

आप देखेंगे यह पुस्तक रामायण विलक्षण है आपको धीमे–धीमे अत्यन्त, विनम्र ,गुणवान तथा श्री राम जैसा विवेकी बना देगी। आप श्री राम जैसे विवेकी हो जाऐं और क्या चाहिए। आपको पता भी नहीं चलेगा यह कब और कैसे हो गया।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

रामराज्य :– इसमें तो राजा अपने से छोटों का खून नहीं चूसता है बल्कि उनका पूरी तरह से जो भी ध्यान रखा जा सकता है उनका ध्यान रखता है तथा उनको उचित शिक्षाऐं ,उचित प्रशिक्षण दिलाता है तथा उनके मनों को बहुत प्यार से पालता है ऐसे कि उन सबके मन करना ही सिर्फ वही चाहते हैं जो कि किया जाना चाहिए। अपने से, बड़ों की, ग्राहकों की, मन से, सच्चे भाव से ,प्रसन्न मन से ऐसे सेवा करता है कि उनका उसे ज्यादा से ज्यादा देने का मन करे ताकि वह अपने छोटों का अच्छा पालन पोषण कर सके बल्कि उनका धन लूट सकने के लिए उनकी चापलूसी नहीं करता है।

रावणराज्य :– विपरीत है यहां राजा अपने छोटों की तो जान निकाल लेता है, उनका खून चूस लेता है जितना ज्यादा से ज्यादा सम्भव है तथा दूसरी तरफ बड़ों की, ग्राहकों की सेवा करने की जगह उनकी चापलूसी करने का भाव रखता है क्योंकि वह चापलूसी करके ही ज्यादा से ज्यादा धन खींच सकता है। अर्थात भाव चापलूसी का होता है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

मैं तो आपको लूट रहा हूँ। ध्यान दें मैं तो आपके साथ आपको लूटने के लिए जुड़ रहा हूँ। अब आप देख लें आपको लुटना है या नहीं। अब अगर आपको मेरे हाथों लुटने में मजा आता है तो मुझे अपने साथ जोड़ो। अब आप देख लो अगर आपको लगता है कि नहीं यार रामराज्य आहवाहन मिशन के हाथों लुटना भी मंजूर है हमें तो आपके हाथों लुटना भी मंजूर है तो ठीक है। वह एक अलग बात है अब मैं लूटते–लूटते आपसे वे सब अभिशाप भी, आपकी कमियां भी जो आपको सफल करने से रोक रही हैं वह भी लूट लूंगा। आपको तो मेरे हाथों लुटने के लिए तैयार होना होगा अगर आप को मुझ पर विश्वास है तो बताओ ध्यान रखें यह सिर्फ बात नही है यही हकीकत है आप अपने दिल से पूछ लीजिए आपका दिल तैयार है तो आ जाइये।

मेरे से एक भक्त ने पूछा मुझे गुस्सा बहुत आता है मैं अपनी पत्नी पर झल्ला–झल्ला कर पड़ता हूँ। मुझे क्या करना चाहिए ?

* * * * * * * * * * * * * * * * *

मेरा जवाब सुनिये। आपकी सोच में कुछ कमी है आप निम्नलिखित जानिए सब कुछ सही हो जाएगाः–

1. पत्नी व अपना परिवार के सदस्य का आवश्यक है कि वे तुम्हारे दोस्त होने चाहिएं, उन्हें अपना दोस्त बनाना तुम्हारा फर्ज है और ध्यान रखें दोस्तो से लड़ाई की बातों पर भी नहीं लड़ा जाता है तथा उनको

नजरंदाज, क्षमा कर दिया जाता है। वरना आपके दोस्त आपसे बोलना छोड़ सकते हैं।

2. अपना घर वह होता है जहां आप अपने मन से रह सकें यानि कि अपने मन मुताबिक। आप इस घर को अपना ही घर क्यों मानते हैं वह घर उनका भी तो है उन्हें अपने मन मुताबिक रहने का भी हक है आप उनसे उनका घर न छीनें तथा यह प्रदर्शित न करें कि वे अपने घर में नही हैं बल्कि तुम्हारे घर में हैं। बल्कि उनके मनों को पालें कि उन सबका मन सुन्दर हो जाए, और आपका घर सुन्दर तथा प्यारा सा हो जाए और यह तब होता है जब मन चिड़चिडें न हों बल्कि खुश हों आप अपने परिवार के मनों को चिड़चिड़ा बनाने में सहयोग न करें।

3. आप जब पत्नी को कोई निर्देश देते हैं और वह वैसा नहीं करती है तो आपको गुस्सा क्यों आता है अरे भाई आपने ठीक से नहीं समझाया होगा, या आपको ठीक से सिखाना, समझाना नहीं आता होगा, आप उसे ऐसे सिखाइये जैसे उसे सीखना पसन्द है। आप ऐसी उम्मीद क्यों करते हैं कि आप सिखाओ और दूसरा एकदम वही करना शुरु कर देगा अरे भाई यह भी हो सकता है कि आप गलत हो।अरे भई आपने सिखा दिया है जब उनकी वह समझ में आ जाएगा तो वे कर लेंगे। सिखाओ और उन सबके सीखने का इन्तजार तो करो, फल पाने की इतनी जल्दी क्यों कर रहे हो, थोड़ा सब्र तो करो, और फल नहीं मिल रहा तो भगवान की इच्छा नहीं होगी, प्रयास करो, जबदस्ती नहीं।

* * * * * * * * * * * * * * * * *

जब आपका व्यवहार स्त्रियों से होता है तो यह बडी–बडी बातों का नहीं होना चाहिए, छोटी–छोटी बातों का होना चाहिए। ये छोटी–छोटी बातें तो पचा पाती है, बड़ी बातों से घबरा जाती हैं तथा फिर भाग जाती हैं। इनको सब कुछ ही छोटा सा चाहिए।

छोटी–छोटी = खुशियां
छोटी–छोटी = हंसी मजाक
छोटी–छोटी = छेड़ छाड़
छोटी–छोटी = लड़ाईयां
छोटे–छोटे = सपने
छोटी–छोटी = दावतें
छोटे–छोटे = उपहार
छोटी–छोटी = शायरी
छोटी–छोटी = कल्पनाएं
छोटी–छोटी = शिक्षाऐं
छोटा–छोटा = समय

जिस समय आप यह सब सीख जाऐंगें आप स्त्रियों के मित्र हो जाऐगें अन्यथा भूल जाईऐ। फिर आप कृष्ण के जैसे जीवन का सपना न देखें आपको श्री राम जैसे जीवन का ही सपना देखना होगा। और सर्वोत्तम तो है भगवान श्री शिव जैसा जीवन, अपनी पत्नी से प्यारा सा प्यार तथा बाकी सारी दुनिया से विरक्ति, सिर्फ ध्यान।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

राम शरणागतों के रक्षक हैं गम्भीर हैं वे एक अच्छे संरक्षक है, अर्थात सम्मानीय हैं प्रेम प्यार भी करते हैं रिश्तों के मुताबिक मर्यादित, वे अपना जीवन सभी के संरक्षक के रुप में व्यतीत करते हैं।

कृष्ण वे सबके संरक्षक तो हैं मगर सिर्फ दोस्त की तरह वे हर किसी को अपना दोस्त ही मानते हैं तथा हर किसी के दोस्त ही रहते हैं चाहे कोई भी रिश्ता क्यों न हो ठीक उस ही तरह जैसे दोस्तों में मर्यादाऐं नाम मात्र की ही होती हैं अतः यहां भी सब कुछ ऐसा ही है बस यह एक इतने अच्छे दोस्त हैं कि हम गर्व महसूस करते हैं कि वे हमारे दोस्त हैं।

शिव ये स्वयं में मस्त हैं बस दूसरों के अच्छेपन को देख–देख कर खुश होते हैं बस चाहते हैं कि सारी दुनिया अच्छी सच्ची तथा प्यारी सी हो जाए। यह सब कुछ से विरक्त हैं मगर कभी भी किसी को दुख देना नही चाहते हैं कभी किसी को निराश नहीं करते हैं।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

सोचें, क्या हमारे जीवन में कोई स्रोत है जो हमें लगातार अच्छी–अच्छी शिक्षाऐं देता रहता है, जो हमें लगातार एक सफल जीवन की तरफ बढ़ाता रहता है। सफल जीवन अर्थात ऐसा जीवन जहां हम अपने कर्म को इस प्रकार करते हैं, अपने व्यवहार को ऐसा रखते हैं कि हमें सब प्यार करते हैं हमारा सब सम्मान करते हैं, हम आत्मगौरव का अनुभव करते हैं।

आज अगर हम विचार करके देखें तो हमारे जीवन का यह शिक्षाऐं देने वाला भाग खाली पड़ा है, हम कामों के दबाव में, तनावों के बीच, भागते दौड़ते, बस जो दिमाग में आ रहा है, किये जा रहे हैं पता ही नहीं चल रहा है, जीवन कहां जा रहा है, हम क्यों आए थे हमें क्या करना था आदि। हम कहां जाए इसके लिए आज अच्छे बुजुर्ग भी उपलब्ध नहीं है, वे अच्छे बुजुर्ग हैं या नही यह भी पता नहीं है, साधु सन्तों के पास जाए , वे साधु सन्त हैं या नहीं यह भी पता नहीं है।

मैं बताता हूँ रामायण ही ऐसी एकमात्र कलयुग में किताब है जो हमारे जीवन के इस रिक्त स्थान को भरती है। यह वह है जिसे सबने (भगवान सहित) सार्वजनिक तौर पर स्वीकार किया है। हम इसे अपने जीवन का हिस्सा बना लें रोज पढ़ें अपनी सुविधा अनुसार आप नहा धोकर पूजनीय तरीके से पढ़ते हैं सर्वोत्तम मगर न पढ़ने से अच्छा तो है चाहें जैसे जिस हालत में आपसे पढ़ना सम्भव है वैसे पढ़ें, आप देखेगे आप श्रीराम जैसे सुन्दर विवेकी होने लग जाऐंगे।

ध्यान रखें आप चाहें इसे जैसे भी पढ़ें राम जी कभी नाराज नहीं होते हैं वे तो खुश हो जाते हैं कि यह एक अच्छा इन्सान सफल इन्सान जिस पर मै गर्व कर सकूं ऐसा बनने का प्रयास कर रहा है तथा भागकर आते हैं तथा लग जाते हैं तुम्हारी मदद करने में।

यही हकीकत है मेरी खातिर मेरे कहने से अपने जीवन

में इसे उच्च शिक्षा का एक स्रोत बना लें रोज चाहें 1 मिनट 2 मिनट, रोज अध्ययन करें, आप पाऐंगे जीवन की सच्ची सफलता । यह निश्चित है आप मुझको धन्यवाद देंगे, और खुश होंगे अरे वाह मेरे यहां रामराज्य जैसा सुन्दर प्यारा सा राज्य हो गया अरे आज नहीं तो कल अगर 2 साल में भी हो जाता है तो क्या बुराई है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

फल पाने की इच्छा के प्रति आपका उद्देश्य आपकी नीयत अच्छी होनी चाहिए कि उस फल का सदुपयोग किया जाएगा न कि दुरुपयोग। भगवान के दीवाने बन जाओ आप भगवान से जो भी आपकी इच्छा हो उसे मांगते रहो उसकी प्रार्थना करते रहो तथा उस फल पाने के लिए जो कर्म करना चाहिए सच्ची नीयत से उस कर्म को करते रहो। तथा भगवान जो भी फल देते रहें उसे लेते रहो पूर्ण विश्वास के साथ कि शायद आपका अभी यही प्रालब्ध है फिर देखिए भगवान का साथ आपके साथ धीरे–धीरे बढ़ता चला जाएगा।

आप भगवान की जितनी भी आप से सम्भव हो मदद करते रहो कि अगर वे आपको वह फल देना चाहें तो दे सकें उनके मार्ग में हमें वह फल देने में कोई रुकावट या कोई बाधा न आऐ।

अगर भगवान नहीं दे पा रहे हैं तो उनकी कोई मजबूरी होती है उन्हें हमें पूर्व जन्म में या पूर्व समय में किये गये

कर्मो का, दुष्कर्मो का फल भी तो देना होता है।

यही है सोच जो आपको भगवान का सच्चा भक्त बनाऐगी तथा भगवान को तुम्हारा सुख दुख का साथी बना देगी तथा यही जीवन की सच्ची सफलता है जो आपको सिर्फ तरक्की के रास्तों की तरफ ले जाऐगी।

* * * * * * * * * * * * * * * * *

प्रभु राम हरि, प्रभु राम हरि
हरि राम हरि, हरि राम हरि
प्रभु राम हरि, प्रभु राम हरि
हरि राम हरि, हरि राम हरि
भरत के भ्राता राम हरि, प्रभु राम.....
लक्ष्मण भ्राता राम हरि, प्रभु राम .....
शत्रुध्न भ्राता राम हरि, प्रभु राम .....
सीता पति श्री राम हरि श्री राम हरि .....
हनुमान प्रभु राम हरि, प्रभु राम .....
सुग्रीव सखा राम हरि, प्रभु राम .....
शिव प्रभु राम हरि, प्रभु राम .....
लव कुश पिता राम हरि, प्रभु राम .....
राजराजेश्वर राम हरि, प्रभु राम .....
सत्यनिष्ठ प्रभु राम हरि, प्रभु राम .....
देवों के देव राम हरि, प्रभु राम .....
जय जय जय जय श्री राम हरि राम हरि, प्रभु राम .....
श्री राम, हरि श्री राम, हरि राम हरि, प्रभु राम .....
कौसल्या नन्दन राम हरि राम हरि, प्रभु राम .....
दशरथ नन्दन राम हरि, प्रभु राम .....

प्रभु राम हरि प्रभु राम हरि राम हरि, प्रभु राम .....
भिलनी के भगवान राम हरि, प्रभु राम .....
गुरू विश्व मित्र के शिष्य राम हरि, प्रभु राम .....
गुरू वाशिष्ठ के शिष्य राम हरि, प्रभु राम .....
केवट के प्रभु राम, प्रभु राम राम हरि, प्रभु राम .....
निषादराज सखा प्रभु राम राम हरि, प्रभु राम .....
हनुमत के प्रभु श्री राम हरि श्री राम हरि .....

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

आप का काम है मेरा समय ले लेना तथा मेरा काम है सिर्फ अपने समय का पैसा ले लेना। अब आप तो अपने काम में कुशल हैं मैं अभी अपने काम में कम कुशल हूँ। आप मेरे संरक्षक है मेरे राम हैं, तो मैं चाहता हूँ कि मेरे काम का भी आप ही ख्याल रखें। क्योंकि जब आपका काम तो होता रहता है तथा मेरा काम ही पैन्डींग रहता है तो यह मन को दुख तथा गुस्सा देता है।

मेरा स्वभाव आप जानते ही हैं मै अपनों का काम तो एकदम कर देता हूँ मगर अपनों से अपना काम कराने में झिझकता रह जाता हूँ। मगर अन्त में जब मुझे अपनों से अपना काम बनाने के लिए दिमाग लगाना पड़ता है सोचना पड़ता है, तो उससे अपनापन खराब होता है मुझे दुख होता है। अतः आप मेरे राम हैं आप मुझसे अपने भी काम बनाऐं तथा मेरे भी काम बनाऐं मुझे समय पर सिखाऐं कि मैं आपसे भी अपना काम करवा सकूँ। ताकि हम हमेशा साथ बने रहें।

यह तो आप देखते ही हैं आप अपना बनाने में उनके

कुछ अभी जानता भी नही हूँ मगर मेरे भगवान सभी कुछ जानते हैं तथा सभी कुछ कर पाते हैं अतः धीमे धीमे भगवान के अभ्यास से एक दिन मैं भी सभी कुछ जान जाऊंगा वह ही तो भगवान से एकीकार होगा। अर्थात मैं वही सब सोचूंगा तथा वही सब करुंगा तथा वह सब कर पाऊंगा जो भगवान कर पाते हैं। ऐसा उस दिन होगा जब मैं पूर्ण रुप से भगवान का सच्चा भक्त हो जाऊंगा तो उस दिन भगवान में तथा भक्त में फर्क खत्म हो जाता है। यही सत्य है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

नयापन हमें अपने मिशन में ध्यान रखना है कि पुराना पन हटाते रहना है, नयापन लाते रहना है, हमारी सभी चीजें नयी–नयी सी ही लगनी चाहिए जो साफ करके हो जाती हैं तो ठीक है अन्यथा नयी बदलें। मन कपड़े जूते, बर्तन, सजावट का समान, रंग, मन्दिर, फर्नीचर, अलमारियां, सब हमेशा नयी करते रहना है। यही है रामराज्य बस ऐसे ही रामराज्य आ जाएगा।

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

मुझे लगता है कि मैं एक भगवान का बच्चा हुँ और भगवान बच्चे को परवरिश करके भगवान की तरह चलना सिखा रहे हैं। जैसे बच्चा जरा सा सीखता है तो बाहर को भागता है मगर उसके माता–पिता उसे अन्दर खींच लेते हैं कि अभी इसे कच्चा आता है कहीं बाहर जाते ही गिर न जाऐ, कहीं उसे कोई चोट न लग जाए और जब तक उसे मजबूती से चलना नहीं आ जाता वे इसको बाहर नहीं निकलने देते हैं। इस समय मैं बतौर

'रामराज्य आहवाहन मिशन' एक राम के बच्चे के रुप में ही हूँ। मैं बाहरी दुनिया में अपनी रामपन की चाल को लेकर भागने के लिए परेशान हूँ तथा राम मुझे बार–बार रोक रहे हैं अभी नहीं, अभी नहीं।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

मैं महसूस करता हूँ कि आदमी राम के रास्ते पर चलकर रामपन अपनाकर अपनी आत्मा को इतना बलवान कर लेता है कि उसकी आत्मा का जोर अपने शरीर पर भी चलने लगता है तभी वह बाहरी दुनिया के द्वारा भगवान माने जाने लगता है क्योंकि बाहरी दुनिया तो शरीर को ही जानती है वह आत्मा को तो देख ही नहीं पाती है। जबकि आत्मा सभी कुछ शरीर तथा आत्माएँ सभी को देख पाती है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

श्री राम अरबो देवों के समान सुन्दर, अरबों इन्द्रों के समान ऐश्वर्यवान, अरबों दुर्गाओं के समान शत्रुनाशक, अरबों पवन के समान महाबली, अरबों सूर्यों के समान प्रकाशवान, अरबों चन्द्रमाओं के समान शीतल, अरबों कालों के समान दुर्गम धूम्रकेतुओं के समान प्रबल, अरबों पातालों के समान अथाह, अरबों यमराजों के समान भयानक, अरबों तीर्थो के समान पवित्र करने वाले, उनका नाम पाप समूह का नाश करनेवाला, अरबों हिमालयों के समान स्थिर, अरबों समुद्रों के समान गहरे, अरबों कामधेनुओं के समान कामना पूर्ण करने वाले, अनन्त सरस्वतियों के समान चतुर, अरबों ब्रह्माओं के समान पालनकर्ता, अरबों रुद्रों के समान

संहारक, अरबों कुबेरों के समान धनवान, करोड़ों भाषाओं के समान, बोझ उठाने में अरबों शेषों के समान जगदीश्वर प्रभु श्री राम जी उपमारहित है। अपारगुणों से समृद्ध है तथा बस प्रेम (भाव) के वश हैं।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

हे भक्त मेरी कृपा से समस्त शुभ गुण तेरे हृदय में बसेंगें, भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, योग, मेरी लीलाऐं, और उनके रहस्य तथा विभाग, इन सबके भेद तु मेरी कृपा से जान जाएगा, तुझे साधन का कष्ट नहीं होगा। पवित्र, सुन्दर, सुशील, बुद्धि वाला सेवक किसे प्यारा नहीं लगता।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

आदमी जैसा पेड़ लगाता है वैसे ही फल पाता है मैनें सोचा जब पेड़ लगाना ही है तो क्यों न सर्वोत्तम पेड़ लगाया जाए और मैने श्री राम नाम का पेड़ लगा डाला है तथा उसे सींच रहा हूँ अब यह इतना बडा तो हो गया है कि नष्ट तो नहीं होगा बस फल आना बाकी है अगर पेड पर फल आने लगे तो कितना सुन्दर फल होगा श्रीं राम की कृपा होगी तो पेड़ जरुर फलेगा तथा वे मेरी इसमें मदद भी कर रहे है कितना सुन्दर होगा जब एक विशाल वट जैसा वृक्ष होगा और अपने फलों से लदा रहेगा लोग यहाँ से कलम ले जाऐंगे अपने यहाँ लगाऐंगें फिर दुनिया में तमाम सारे राम के पेड़ होगें। हे राम आप मेरा सपना पूरा करे।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

यदि विचार किया जाए तो कलियुग के समान कोई युग

नहीं है क्यों कि इसमें तो इन्सान मात्र श्री राम जी के गुणों को गा–गाकर ही बिना परिश्रम तर जाते है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

सत्य ही समस्त उत्तम सुकृत्तों (पुण्यों) की जड़ है ऐसा वेद पुराणों में कहा गया है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

श्री हरि की कृपा से अगर श्रद्धा हमारे हृदय में आकर बस जाए तो जप, तप, ब्रत, नियम, शुभ, धर्म, व्यवहार, आचरण, जैसे वेदों में कहा है कि हम अपने को सेवन करायें तथा फिर आस्तिकता के द्वारा जैसे बछड़ें द्वारा गाय के थनों में दूध उतारा जाता है अर्थात आस्तिक रहते हुए तथा तमाम सांसारिक प्रपचों से अपने को दूर रखते हुए विश्वास करें तथा निर्मल मन द्वारा अपने में भक्ति फलाएं ।

अर्थात धर्माचार में प्रवृत रहते हुए, श्रद्धा भाव रखते हुए वश में किए हुए निर्मल मन द्वारा धर्ममय रहते हुए निष्काम भाव से सब कार्य करें तथा निरंतर क्षमा तथा संतोष बनाए रखें एवं धैर्य पूर्वक मन को संयम में रखते हुए कार्य करें।

तब प्रसन्न रहते हुए तथा तत्व विचार करते करते तथा इन्द्रियों को संयमित रखते हुए सत्य और सुन्दर का अनुसरण करते हुए निर्मल सुन्दर तथा पवित्र एवं वैरागी रहें।

योग से समस्त शुभाशुभ कर्मो को भस्म करें। वैराग्य से ज्ञानरुपी बुद्धि का प्रयोग करके सुन्दर सुन्दर मन बनावें तथा वैज्ञानिक भाव द्वारा अपने अहं का नाश करते हुए जो ऐसा भाव रखता है सोहम् कि मैं ही ब्रह्म

हूँ ऐसी वृत्ति को अखण्ड रखता है तो आत्मानुभव का सुन्दर प्रकाश फैलता है तथा संसार का सारा भ्रम नष्ट हो जाता है अविद्या तथा मोह मिट जाता है विज्ञान रुपी बुद्धि के द्वारा जीव कृतार्थ हो जाता है।

मगर इस सबमें माया अनेकों विध्न पैदा करती है मगर अगर बुद्धि सयानी होती है तो वह इन माया जालों अर्थात ऋद्धियों सिद्धियों की तरफ ताकती भी नहीं है अगर माया की भी नहीं चली तो फिर देवता विध्न उत्पन्न करते है अर्थात विषयों की लालसा पैदा करवाते हैं तथा जीव का ज्ञान दीपक बुझाने की कोशिश करते हैं

ज्ञान का मार्ग दुधारी तलवार हैं कहने समझने साधने में कठिन है इस मार्ग से गिरते देर नहीं लगती है, जब कोई इसे निर्विध्न निबाह लेता है तब कहीं उसे राम जी की कृपा प्राप्त होती है मगर भक्ति मार्ग से ये कृपा अत्यन्त सरलता से सुलभ हो जाती है।

राम अर्थात र+आ+म रुप से बीज है। यह राम नाम ही ब्रह्मा विष्णु और महेश है। यह वेदों का प्राण है निर्गुण, उपमारहित और गुणों का भण्डार है।

बा0का0 84(4)

ऊँ (ओ+इ+म) रुप परमात्मा का निर्गुण रुप है।

राम (र+आ+म) सगुण रुप है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

जो प्राणी प्रेम के साथ सुन्दर बुद्धि से भक्ति रुपी मणि को ढूँढता है वह इसे पा जाता है कहते हैं श्री राम जी के दास श्री राम जी से भी बढ़कर हैं क्योंकि श्री राम जी

अपने दासों को अपने से भी ज्यादा प्यार करते हैं। भक्ति ऐसी मणि है वो जिसके हृदय में रहती है उसे ऐसा प्रकाशवान करती है जो प्रकाश हमेशा तथा अनन्त रहता है तथा कोई इसे बुझा नहीं सकता है क्योंकि ये तो स्वयं ही प्रकाशवान है किसी पर निर्भर नहीं है अर्थात किसी दूसरे की सहायता से प्रकाश नहीं करती है।

उ0का0 119 (1.–3)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

संसार में सभी जीव मानस रोग शोक, हर्ष, विषाद, भय, प्रीति, वियोग से पीड़ित हैं। ये मुनियों के हृदय में भी विषय रुपी कुपथ्य पाकर अंकुरित हो जाते हैं, ये सिर्फ श्री राम कृपा से ही जाते हैं । जब सदगुरु रुपी वैध के वचन में विश्वास हो जाए तथा विषयों की आशा न करे जहॉ संयम हो (परहेज), श्रद्धा से पूर्ण बुद्धि सुन्दर रखी जाए तभी ये रोग भले ही नष्ट हो जाएं अन्यथा नहीं तो ये करोड़ो प्रयत्नों से भी नहीं जाते हैं। इनको तभी नष्ट हुआ जानिए जब दिल में वैराग्य का बल बढ़ जाऐ तथा उत्तम बुद्धि की भूख दिन प्रतिदिन बढ़ती जाऐ विषयों की कामना मिट जाए।

उ0का0 129 (1–5)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

ऐसा वर्णन किया गया है कि रामराज्य में सभी नर नारी उदार हैं, परोपकारी हैं, तथा ब्राह्मणों के सेवक हैं, पुरुष मात्र एक पत्नीव्रती हैं, तथा स्त्रियां भी मन वचन और कर्म से पति का हित करने वाली हैं।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

श्री रामचन्द्र जी के राज्य में दण्ड केवल सन्यासियों के हाथों में है जीतो शब्द सिर्फ मनों को जीतने के लिए प्रयोग किया जाता है। कोई अपराध करता ही नहीं तो दण्ड की आवश्यकता ही नहीं पडती तथा सभी लोग अनुकूल होने के कारण भेदनीति की भी आवश्यकता ही नहीं रह जाती है।

उ0का0 21 – 24

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

अयोध्यापुरी के राजा श्री रघुनाथ जी को हृदय में रखकर नगर में प्रवेश करते हुए सब काम कीजिए उसके लिए विष भी अमृत हो जाता है। शत्रु मित्रता करने लगते हैं समुद्र गाय के खुर के बराबर हो जाता है अग्नि में शीतलता आ जाती है और हे गरुड़ जी सुमेरु पर्वत उसके लिए रज के समान हो जाता है जिसे भी श्री रामचन्द्र जी एक बार कृपा करके देख लेते है। वही नम्र हो जाता है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

गौतम मुनि की पत्नी (अहिल्या) का उद्वार करने वाले चरणों को हृदय में लाकर देखो (हृदय में उनका ध्यान करो) तो सब प्रकार की परम कल्याण तथा सारी सफलताऐं हाथ में ही (प्राप्त) समझों।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

सीता जी का दुख सुनकर सुख के धाम प्रभु के कमल नेत्रों में जल भर आया और वे बोले मन वचन और शरीर से जिसे मेरी ही गति है मेरा ही आश्रय है उसे क्या स्वप्न में भी विपत्ति हो सकती है। मैं उसके सब दुख दूर कर लूंगा।

सु0का0 39 (1)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

मन्त्री, वैध और गुरु ये तीन यदि आपके अप्रसन्न हो जाने के भय से या लाभ होने की आशा से हित की बात न कहकर अगर आपको प्रिय लगने वाली वाणी अर्थात वही बात बोलते हैं जो कि आपको पसन्द आने वाली हो तो निश्चित रुप से क्रमशः राज्य, शरीर और धर्म का शीध्र ही नाश समझिए।

सु0का0 37

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

श्री राम बिना ही कारण स्नेह करने वाले हैं।

सु0का0 38 (3)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

जिसे सम्पूर्ण जगत से द्रोह करने का पाप लगा है। शरण में जाने पर प्रभु उसका भी त्याग नहीं करते हैं जिनका नाम तीनों तापों का नाश करने वाला है वे ही प्रभु भगवान मनुष्य रुप में प्रकट हुए हैं। हृदय में यह समझ लीजिए गहराई से समझ लीजिए ।

सु0का0 38 (4)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

राम जी की यह विशेषता थी कि पहले वह अपने छोटों से भी राय करते थे तब फैसला लेते थे।

सु0का0 42 (3)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

प्रभु कहते हैं मेरा प्रण है शरणागत के भय को हर लेना, शरण में आये हुए पर पिता की भांति प्रेम करना। वे कहते हैं जो मनुष्य अपने अहित का अनुमान करके शरण में आए हुए का त्याग कर देते हैं उनको देखने से

भी पाप लगता है वे पापमय जिन्हें करोड़ों ब्राह्मणों की हत्या लगी हो शरण में आने पर मैं उन्हें भी नहीं त्यागता जीव ज्यों ही मेरे सम्मुख आता है त्यों ही उसके करोड़ो जन्मों के पाप नष्ट हो जाते है।

जो मनुष्य निर्मल मन का होता है वही मुझे पाता है मुझे कपट और छल नहीं सुहाते अतः मेरे पास अगर कोई आया है तो कपटी को तो दण्ड मिल जाता है तथा निर्मल मन को प्रसाद मिल जाता है मुझे तो दोनों ही स्थितियों में चिन्ता नहीं है।

सु0का0 42 (4) – 43 (4)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

जो कोई भयभीत होकर चाहे जड़, चेतन, सम्पूर्ण जगत का द्रोही ही क्यों न हो मेरे पास आ जाता है तथा छल, कपट, द्रोह छोड़ देता है मैं उसे शीघ्र ही साधु कर देता हूँ।

तथा जो अपने माता पिता, भाई, पुत्र, स्त्री, शरीर, धन, मित्र, परिवार सभी के ममत्व रुपी धागे बटोर कर और सब की एक डोरी बटँकर उसके द्वारा जो अपने मन को मेरे चरणों से बांध देता है। (यानि कि सारे संसारिक सम्बन्धों का केन्द्र मुझे बना लेता है) मुझे उस सज्जन का ऐसा लालच रहता है जैसे लोभी को धन का लालच होता है। मैं उसके निहोरे पर तो कुछ भी करता हूँ यहां तक कि जन्म लेकर सांसारिक यातनाऐं भी उठाता हूँ । हे श्री राम आपकी जय हो, जय हो, जय हो।

सु0का0 47 – 48

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

जो मनुष्य सगुण (साकार) भगवान के उपासक हैं दूसरे के हित में लगे रहते हैं, नीति और नियम में दृढ़ हैं और जिन्हें ब्राह्मणों के चरणों में प्रेम है वे मनुष्य मुझे प्राणों के समान प्रिय हैं।

सु0का0 48

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

"ढोल गंवार शूद्र पशु नारी, सकल ताड़ना के अधिकारी।"

ढोल, गंवार, शूद्र, पशु और स्त्री ये सब शिक्षा के अधिकारी है ये आप पर निर्भर है आपका फर्ज है कि अपने साथ–साथ इन सबको भी तारें।

सु0का0 58 (9)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

श्री राम के गुण गूढ़ है पण्डित और मुनि तो उन्हें सुनकर समझकर वैराग्य पाते हैं परन्तु जो भगवान से विमुख हैं जिनका धर्म में प्रेम नहीं है वे महामूढ़ उन्हें सुनकर मोह को प्राप्त होते हैं।

अर0 का0 0 (0)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

श्री रामचन्द्र जी का सुन्दर निर्मल यश कलियुग के पापों को नाश करने वाला, मन का दमन करने वाला तथा सुख का मूल है यह कठिन कलिकाल पापों का खजाना है इसमें न धर्म है, न ज्ञान है, न योग है तथा न जप ही है इसमें तो जो लोग सब भरोसों का छोड़कर श्री राम जी को ही भजते हैं बस वे ही चतुर हैं।

अर0का 6 (क) व 6 (ख)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

राम अखण्ड और अनन्त ब्रह्म है जो अनुभव से ही जानने में आते है।

अर0का0 12 (6)

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

शस्त्री (शस्त्रधारी), नर्मी (भेद जानने वाला), समर्थ, स्वामी, मूर्ख, धनवान वैद्यभाट, कवि और रसोइया इन नौ व्यक्तियों से विरोध (वैर) करने से कुशल नहीं होता है।

अर0का0 25 (2)

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

मरते समय श्री राम का नाम मुख में आ जाने से अधर्म (महान पापी) भी मुक्त हो जाता है। ऐसा वेद गाते है।

अर0का0 30 (9)

जिनके मन में दूसरों का हित बसता है (समाया रहता है) उनके लिए जगत में कोई भी गति दुर्लभ नहीं है।

अर0का0 30 (5)

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

जो संत राम मन्त्र को जपते हैं, प्रभु उन अनन्त सेवकों के मन को आनन्द देते हैं।

अर0का0 31 (2)

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

शाप देता हुआ, मारता हुआ और कठोर वचन कहता हुआ भी ब्राह्मण पूजनीय है। ऐसा कहते हैं कि शील और गुण से हीन ब्राह्मण भी पूजनीय है। और गुणगणों से युक्त और ज्ञान में निपुण भी शूद्र पूजनीय नहीं है।

मेरा मन कहता है यह आदरणीय एवं स्नेह योग्य हो सकता है। मगर पूजनीय नहीं हो सकता है।

अर0का0 33 (1)

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

भगवान कहते हैं

पहली भक्ति है संतो का सत्संग,

दूसरी भक्ति है मेरे कथा प्रसंग में प्रेम,

तीसरी भक्ति है अभिमान रहित होकर गुरु के चरण कमलों की सेवा,

चौथी भक्ति है कपट छोडकर मेरे गुण समूहों का गान करे,

पॉचवी भक्ति है मेरे (राम) मन्त्र का जाप और मुझमें दृढ़ विश्वास,

छठी भक्ति है इन्द्रियों के निग्रह, शील (अच्छा स्वभाव या चरित्र), बहुत कार्यों से वैराग्य, और निरन्तर संत पुरुषों के धर्म आचरण में लगे रहना,

सातवीं भक्ति है जगत भर को समभाव से मुझमें ओतप्रोत (राममय) देखना और संतो को मुझसे भी अधिक मानना

आठवीं भक्ति जो कुछ मिल जाए उसी में संतोष करना और स्वप्न में भी पराये दोषों को न देखना।

नवीं भक्ति है सरलता सब के साथ कपट रहित बर्ताव करना हृदय में मेरा भरोसा रखना और किसी भी अवस्था में हर्ष और दैन्य (विशाद) का न होना।

इनमें से कोई एक भी हो तो वह भगवान को बहुत प्रिय हो जाता है और अगर सभी हो तो क्या कहना।

अर0का0 35 (1–3)

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

स्त्री को कभी अकेली नहीं छोड़ना चाहिए , भली भांति चिन्तन किये हुए शास्त्र को भी बार–बार देखते रहना चाहिए तथा अच्छी तरह सेवा किये हुए राजा को भी अर्थात जिस राजा की तुमने खूब सेवा की है वश में नहीं समझना चाहिए।

अर0का0 34 (4)

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

स्त्री को चाहें हृदय में ही क्यों न रखा जाए परन्तु युवती स्त्री, शास्त्र और राजा किसी के वश में नहीं रहतें है।

अर0का0 36 (5)

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

काम, क्रोध और लोभ ये तीन अत्यन्त प्रबल दुष्ट हैं। लोभ को तो इच्छा और दम्भ का बल है काम को केवल स्त्री का बल है और क्रोध को कठोर वचनों का बल है।

अर0का0 35 (क) व (ख)

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

परोपकारी पुरुष बड़ी सम्पत्ति पाकर विनय से झुक जाते हैं।

अर0का0 40

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

क्रोध, काम, लोभ, मद और माया श्री राम जी की दया से छूट जाते है।

अर0का0 35 (2)

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

श्री नारद जी ने राम जी से वरदान मांगा कि 'राम' नाम सब नामों से बढ़कर हो और पाप रुपी पक्षियों के लिए शिकारी के समान हो 'राम' नाम तारा मण्डल में चन्द्रमा होकर अन्य सब नाम तारागण हो।

अर0का0 41(4) व 42(क)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

प्रभु बोले मैं हर्ष के साथ कहता हूँ कि जो समस्त आशा भरोसा छोड़कर केवल मुझको ही भजते हैं मैं उनकी रक्षा (रखवाली) ऐसे ही करता हूँ जैसे माता बालक की करती है। सयाना हो जाने पर उस पुत्र पर माता प्रेम तो करती है परन्तु पिछली बात नहीं रहती (क्योंकि अब बच्चा माता पर निर्भर न रहकर अपनी रक्षा आप करने लगता है) ज्ञानी मेरे सयाने पुत्र के समान है और नारद जी जैसा अपने बल का मान न करने वाला सेवक मेरे शिशु पुत्र के समान है।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

मेरे सेवक को केवल मेरा ही बल है और ज्ञानी को अपना बल होता है पर काम, क्रोध रुपी शत्रु तो दोनों के लिए ही हैं भक्त के शत्रुओं को मारने की जिम्मेदारी मुझ पर रहती है परन्तु अपने बल को मानने वाले के शत्रुओं का नाश करने की जिम्मेदारी मुझ पर नहीं रहती है। ऐसा विचार कर बुद्धिमान लोग ज्ञान प्राप्त होने पर भी भक्ति को नहीं छोड़ते है।

अर0का0 42(2–5)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

स्त्री माया की साक्षात मूर्ति है तथा यह माया अत्यन्त दुख देने वाली है जो मोह रुपी वन को तो विकसित करती है

तथा जप तप नियमरुपी जल के स्थानों को ग्रीष्म ऋतु के समान सोख लेती है। माया से ममता हो जाने पर अत्यन्त दुख आते हैं।

अर0का0 43(1–2)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

माया को तो प्रभु ही संभाल पाते हैं भक्त बनें और प्रभु का बल पायें ताकि आप माया को निभा सकें संभाल सकें तथा माया जो आपके पास है जिससे न तो बचना ही चाहिए न उसमें फंसना ही चाहिए क्योंकि इसे जितना भागोगे यह इतना ज्यादा नचाएगी और विरक्त होकर भगवान का भक्त होकर तो यह तुमको सिर्फ आनन्द देगी सताएगी नहीं।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

श्री राम जी कहते है सन्तों के गुण सुनो जिनके कारण मैं उनके वश में रहता हूँ। वे काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर छः विकारों को जीतते हुए पाप रहित, कामना रहित, निश्चल स्थिति, सर्व त्यागी, बाहर भीतर से पवित्र, सुख के धाम, असीम ज्ञानवान, इच्छारहित, मिताहारी, सत्यनिष्ठ, कवि, विद्वान, योगी, सावधान, दूसरों को मान देने वाले अभिमान रहित, धैर्यवान, धर्म में ध्यान, आचरण में अत्यन्त निपुण, गुणों के घर, संसार के दुखों से रहित, संदेहो से सर्वथा छुटे होते हैं मेरे चरण कमलों को छोड़कर उनको न तो देह प्रिय होती है और न घर ही, कानों से अपने गुणों को सुनने में सकुचाते हैं दूसरों के गुण सुनने में विशेष हर्षित होते हैं सम और शीतल होते है, न्याय का कभी त्याग नहीं

करते हैं, सभी से प्रेम रखते हैं जप, तप, व्रत, दम, संयम और नियम में रहते हैं, और गुरु गोविन्द तथा ब्राह्मणों के चरणों में प्रेम रखते हैं। उनमें श्रद्धा, क्षमा, मैत्री, दया, प्रसन्नता और मेरे चरणों में निष्कपट प्रेम होता है। वैराग्य, विवेक, विनय, विज्ञान (परमात्मा के तत्व का ज्ञान, वेद पुराण का यथार्थ ज्ञान) रहता है वे दम्भ, अभिमान और मद कभी नहीं करते और भूलकर भी कुमार्ग पर पैर नहीं रखते सदा मेरी लीलाओं को सुनते और गाते हैं। और बिना ही कारण दूसरों के हित में लगे रहते है आदि।

अर0का0 44 (2) से 45 (4)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

जो लोग श्री राम जी का पवित्र यश गायेगें और सुनेंगे वे वैराग्य, जप और योग बिना ही और परिश्रम बिना ही राम जी की द्वढ़ भक्ति पा जावेंगे।

अर0का0 46 (क)

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

सेवक को स्वामी की सेवा नहीं भूलना चाहिए मगर स्वामी को भी अपने सेवक का ध्यान कभी नहीं भूलना चाहिए क्योंकि सेवक तो स्वामी पर ही निर्भर है। अतः हे प्रभु! हमें कभी नहीं बिसराना (सेवक को सिखाना मगर सेवक की कमियां तथा अज्ञानता देखकर उसे छोड़ न देना प्रभु)

कि0 का0 2 (1–2)

जो लोग मित्र के दुख से दुखी नहीं होते उन्हें देखने से भी बड़ा पाप लगता है। अपने पर्वत के समान दुख को भी धूल के समान समझना तथा मित्र के धूल समान दुख को भी पर्वत के समान समझना चाहिए। जिन्हें स्वभाव से ऐसी बुद्धि प्राप्त नहीं है वे हठ करके मित्रता क्यों करते हैं। मित्र को बुरे मार्ग से रोककर अच्छे मार्ग पर चलावे। उसके गुणों को प्रकट करे तथा अवगुणों को छिपावे। अपने बल के अनुसार सदा मित्र का हित ही करता रहे विपत्ति के समय तो सौ गुना स्नेह करे।

कि0 का0 6 (1–3)

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

छोटे भाई की पत्नी, बहिन, पुत्र की स्त्री और पुत्री ये चारों समान है। इनको जो कोई बुरी दृष्टि से देखता है उसे मारने में कुछ पाप नहीं होता।

कि0 का0 8 (4)

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

- मोरों के झुंड बादलों को देखकर कैसे नाच रहे हैं जैसे वैराग्य में अनुस्क्त गृहस्थ किसी हरिभक्त, विष्णुभक्त को देखकर खुश होते हैं।
- बिजली की चमक बादलों में वैसे ही नहीं ठहरती है जैसे दुष्ट की प्रीति (प्रेम) स्थिर नहीं रहता।
- बादल पृथ्वी के पास आकर ऐसे बरस रहे हैं जैसे विद्या पाकर विद्वान नम्र हो जाते है।
- बूंदों की चोट पर्वत कैसे सहते हैं जैसे दुष्टों के वचन संत सहते हैं।

- छोटी नदियां भरकर किनारों को तोड़ती हुई कैसी चलती हैं जैसे थोड़े धन से भी दुष्ट इतराते हैं तथा मर्यादा का त्याग कर देते हैं।
- पृथ्वी पर पड़ते ही पानी ऐसे गादला हो जाता है जैसे कि शुद्ध जीव पर माया लिपट जाती है।
- सदगुण सज्जनों के पास एक–एक कर ऐसे आ जाते हैं जैसे कि जल विभिन्न स्रोंतो से एकत्र होकर तालाबों में भर जाता है।
- जीव श्री हरि को पाकर ऐसे ही आवागमन से मुक्त अर्थात अचल हो जाता है जैसे कि नदी का जल समुद्र में जाकर स्थिर हो जाता है।
- पाखण्ड मत के प्रचार से सद ग्रन्थ ऐसे ही लुप्त हो जाते हैं जैसे पृथ्वी पर हरी–हरी घास हो जाने से रास्ते दिखने बन्द हो जाते हैं।

कि0का0 14

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

- विद्यार्थियों के समुदायों का वेद पढ़ना ऐसा ही अच्छा लगता है जैसे बरसात की रात में मेढ़कों का बोलना।
- साधक का मन विवेक (ज्ञान) प्राप्त होने पर ऐसा हो जाता है जैसे कि वृक्ष पर नये पत्ते आ गये हों। जिससे वृक्ष हरा भरा तथा सुशोभित लग रहा है।

कि0का0 14 (1)

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

- श्रेष्ठ राज्य में दुष्टों की इसी प्रकार एक नहीं चलती जैसे कि मदर तथा जवासा बिना

पत्तों के हो जाते हैं।

- क्रोध के आने पर धर्म ऐसे ही दब जाता है या धैर्य ऐसे ही लुप्त हो जाता है जैसे कि धूल से ढ़क जाने पर चीज खोजने पर भी नहीं मिलती है।

कि0का0 14 (2)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

- उपकारी पुरुष की सम्पत्ति ऐसे सुशोभित होती है जैसे अन्न से युक्त या लहलहती हुई खेती से भरी पृथ्वी।
- दम्भियों का समाज ऐसा ही लगता है जैसे रात के धने अन्धकार में जुगनु।

कि0का0 14 (3)

* * * * * * * * * * * * * * * * * * *

- स्वतन्त्र होने से स्त्रियां ठीक उसी प्रकार बिगड जाती है जैसे भारी वर्षा से खेतों की क्यारियां फूट चलती हैं।
- विद्वान लोग मोह, मद और मान का उसी प्रकार त्याग कर देते हैं, जैसे चतुर किसान खेतो में से घास आदि निकालकर फेंक देते है।
- कलियुग को पाकर धर्म ऐसे ही भाग जाता है जैसे कि चक्रवान पक्षी बरसात में दिखायी नहीं देते।
- हरिभक्त के मन में काम उसी प्रकार उत्पन्न नहीं होता है जैसे आषाढ़ में वर्षा तो होती है मगर घास नहीं उगती। कि0का0 14 (5)

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

आप से हमारी अपेक्षाऐं :–

1. कहते हैं रामायण में लिखा है कि सत्संग के बिना 'राम' नहीं मिलते। सत्संग का मतलब सन्तों का संग, 'रामराज्य आहवाहन मिशन' को एक संत मानें तथा ऐसी व्यवस्था बना लें कि निरन्तर उसका आपके जीवन में संग बना रहे, आपकी गहृस्थी या कोई विचार उलझे तो यह आपकी उसको श्रीराम बुद्धि के अनुसार सुलझाने में मदद करे।
2. आप भी अन्य सब लोगों के लिए सत्संग बनें तथा उनको भी इस सुन्दर सी राह पर रखें कहते हैं जो बोओगे वही काटोगे, जो दोगे वही पाओगे, अपने आस–पास, अपने सम्पर्क में आने वाले लोगों की बुद्धि को भी सुन्दर बुद्धि बनाने का प्रयास करें।
3. आप इस मिशन पर विश्वास करें कि यह सच्चा है क्योंकि यह सिखाने निकला है सच की राह, सच्ची सच की राह क्योंकि अन्त भला तो सब भला और अंत में तो जीत सच की राह की ही होती है तथा लम्बे समय तक तो सच ही टिकता है, सच कभी परेशानियां नहीं देता, यह हमारा भ्रम है बस सिर्फ हमें लगता है मगर यह हमेशा के लिए हमें आने वाली परेशानियों से बचा लेता है। सीखें 'सच्ची सच की राह'।
4. आप अपने साम्राज्य, राज्य, घर, दुकार में एक सुबह की, और एक शाम की पूजा (प्रार्थना) अवश्य करें जिसमें अपने धर्मानुसार इस ब्रह्माण्ड की सर्वोच्च शक्ति 'परमात्मा' के लिए दीपक जलाऐं उनकी आरती करें उनका ध्यान करें, उनसे प्रार्थना करें। कोशिश करें आपके राज्य के सभी लोग यथा सम्भव, सुखानुसार उसमें शामिल हों, शरिक हों ताकि हम और हमारे राज्य के सभी लोगों को, क्योंकि यह राज्स परमात्मा की रोज नियम से पूजा, प्रार्थना करता है, परमात्मा की कृपा पाने के अधिकारह हो सकें, राजा का कर्तव्य है ऐसी व्यवस्था बना देना।
5. राजा का कर्तव्य है कि कहीं भी लोगों के मनों में कोई दबे हुए शिकवे, शिकायत न रहें जो Communication Gap से हो जाते है व्यवस्था बनायें। सम्भव है तो रोज खाने पर, पूजा

पर, या साप्ताहिक किसी खेल को आयोजन करके या एकविशेष भोजन पर सब लोग साथ बैठें ताकि सभी के मनों का मेल हो क्योंकि 'सब मन मिले का मेला' है।

6. हम श्री राम के उस रूप का जो कि वह अपने शरणागतों पर लुटाते थे, अपने सेवको पर लुटाते थे, अपने आश्रितो पर लुटाते थे का अनुसरण करें, बस हम श्री राम के काम में हाथ बटायें (क्योंकि उनका काम तो रामराज्य बनाना ही था) क्योंकि सभी जीव भगवान पर आश्रित है, तथा भगवान का काम है अपने आश्रितों, शरणांगतो, भक्तों का ध्यान रखना उन्हें दुःखों से बचाना, हम भगवान के इस सुन्दर काम में उनका हाथ बटायें और उन्हें (भगवान को) अपना आभारी बनायें।
7. अहिंसा का रास्ता अपनाऐं केवल शारीरिक अहिंसा ही नहीं बल्कि मानसिक अहिंसा भी। अगर आपने मानसिक अहिंसा करना सीख लिया तो यह दगा आपको सबका प्यार आपके राज्य (घर) में प्यारपूर्ण वातावरण बन जाएगा। मानसिक अहिंसा मतलब किसी के मन को न कचले बल्कि हो सके जो कोशिश करें वह करने की, जिससे कि आपके राज्य के सदस्यों तथा अन्यों के मन खुश हों सके।
8. ध्यान रखे अगर आप सबों को खुशी दे रहे हैं तो अपने (स्वयं) को भी खुशी ही दें, अरे भाई आप का अपने पर हक औरों के हक से ज्यादा ही होना चाहिए फिर कम क्यों, Balance करें, हो जाता हैं।
9. आप मिशन के कार्य में यथा सम्भव सभी प्रकार के जो भी सम्भव है, सहयोग प्रदान करें मगर ऐसा सहयोग जिससे आप गर्व महसूस करें और आपको खुशी मिले ताकि हमारा मिशन अपने उद्देश्य में कामयाब हो सके। कहते हैं तु भगवान के राक्ते पर चल कर तो देख तेरे लिए सारे रास्ते न खोल दूँ तो कहना, तु मेरे लिए आंसू बहा के ता देख मैं तेरी सारी दुनिया अपनी न बना दूं तो कहना, तू मेरे लुटा के तो देख, मैं तेरे पर खजानों का ढ़ेर न लगा दूं तो कहना, तु मुझे अपना बना के तो देख मै हर एक को तेरा अपना न बना दूं तो कहना